



- **मृत्यु:**
  - उनकी मृत्यु वर्ष 1539 में करतारपुर, पंजाब में हुई।

## आधुनिक भारत में गुरु नानक देव की प्रसंगिकता:

- **एक समतावादी समाज का निर्माण:** समानता का उनका विचार नमिनलखिति नवीन सामाजिक संस्थानों के रूप में देखा जा सकता है, जो कि उनके द्वारा शुरू किये गए थे।
  - **लंगर:** सामूहिक खाना बनाना और भोजन को वितरित करना।
  - **पंगत:** उच्च एवं नमिन जातों के भेद के बिना भोजन करना।
  - **संगत:** सामूहिक नरिणय लेना।
- **सामाजिक सद्भाव:**
  - उनके अनुसार, पूरी दुनिया ईश्वर की रचना है और सभी एक समान हैं, केवल एक सार्वभौमिक रचनाकार है अर्थात् "एक ओंकार सतनाम" (Ek Onkar Satnam)।
  - इसके अलावा कृपा, धैर्य, संयम और दया उनके उपदेशों के मूल केंद्र में हैं।
- **न्यायपूर्ण समाज का निर्माण:**
  - उन्होंने अपने शिष्यों के सममुख 'कीरत करो, नाम जपो और बंड छको' (काम, पूजा और दान) का आदर्श रखा।
  - उनके धर्म का आधार कर्म के सिद्धांत पर आधारित था और उन्होंने अध्यात्मवाद के विचार को सामाजिक ज़िम्मेदारी एवं सामाजिक परिवर्तन की विचारधारा में परिणित कर दिया।
  - उन्होंने 'दशबंध' (Dasvandh) की अवधारणा या अपनी कमाई का दसवाँ हिस्सा ज़रूरतमंद व्यक्तियों को दान करने की वकालत की।
- **लैंगिक समानता:**
  - उनके अनुसार, 'महिलाओं के साथ-साथ पुरुष भी ईश्वर की कृपा को साझा करते हैं और अपने कार्यों के लिये समान रूप से ज़िम्मेदार होते हैं।
  - महिलाओं के लिये सम्मान और लैंगिक समानता शायद उनके जीवन से सीखने वाला सबसे महत्वपूर्ण सबक है।
- **शांति स्थापना:**
  - भारतीय दर्शन के अनुसार, गुरु वह है जो रोशनी (अर्थात् ज्ञान) प्रदान करता है, संदेह को दूर करता है और सही रास्ता दिखाता है।
  - इस संदर्भ में गुरु नानक देव के विचार दुनिया भर में शांति, समानता और समृद्धि को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)